Vol 4 Issue 8 Feb 2015

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-8 | Feb-2015
Available online at www.aygrt.isrj.org

GRT

धूमिल के काव्य में उच्च, मध्य एवं निम्न वर्ग का आर्थिक संघर्ष

सुनीता त्रिपाठी

सहायक प्राध्यापक हिन्दी , श्रीयुत महाविद्यालय, गंगेव, रीवा (म.प्र.)

सांराश : सुदामा पाँड़े धूमिल ने अनुभव किया कि इस देश का एक वर्ग ऐसा है जो दिन दूनी राज चौगुनी गति से अपनी पूँजी बढ़ाने में लगा हुआ है। यह वर्ग सुखोपभोग के साधनों के साथ जीते है और महलों में रहते है तथा अपने उद्योग धंधों को फूलने और फैलाने में एकाधिकार का मनमाने ढ़ंग से प्रयोग करते हैं। देश के निर्बल, असहाय, दीनहीन कमजोर, मजदूरों व कामगारों का आर्थिक शोषण करते है।

मुख्य शब्द - धूमिल के काव्य, आर्थिक संघर्ष, उच्च, मध्य एवं निम्न वर्ग।

प्रस्तावना :

धूमिल का मानना है कि इन उद्योग पतियों, मंत्रियो राजनेताओं अफसरों के निहित स्वार्थ के कारण देश की आर्थिक दशा बिगड़ी है। धन बल के आगे कई आर्थिक अपराध सिद्ध कर पाने में कठिनाई हो रही है। समाज में आर्थिक असमानता फैलाने वालों में इस वर्ग का सबसे बड़ा हाथ है। यही कारण है कि धूमिल एक ऐसे युवा कवि है जो अपनी कविता के माध्यम से एकदम ताजा तस्वीर खीचतें है। इन विषयों में सुदामा पांड़े धूमिल जिस काव्य जगत का सृजन करते हैं, वह मानव चरित्रों की दुनिया है। ऐसे लोग शहरों में अफवाहों के पुलिंदे फेंकते हुए देश और धर्म की नैतिकता की दुहाई देते है वे जिसकी पीठ ठोकते हैउनके रीढ़ं की हड्डी ही गायब हो चुकी है। उन्ही के गीतों में एक भाव चित्र प्रस्तुत है -

''वे खेतों में भूख और शहरों में
अफवाहों के पुलिंदे फेकते है।
देश धर्म और नैतिकता की दुहाई दे कर
कुछ लोगो की सुविधा
दूसरों की 'हाय' पर सेंकते है
वे जिसकी पीठ ठोंकते है
उसके रीढ़ की हड्डी गायब हो जाती है।[1]

इसी आर्थिक विसंगति से ऊब कर धूमिल अपने रोष को रोक नहीं पाते और कविता के माध्यम से वस्तु जगत को उद्बोधित करते हुए कहते है -

''सुनों!
आज मै तुम्हें वह सत्य बतलाता हूँ
जिसके आगे हर सचाई
छोटी है, इस दुनिया में
भूंखे आदमी का सबसे बड़ा तर्क
रोटी है।''[2]

पूंजीपतियों के प्रति धूमिल के मन में गहरा आक्रोश है। देश की अव्यवस्था, असमानता, भ्रष्टाचार आदि सारे आरोप वे पूँजीपतियों पर मढ़ते हुए कहते है कि –

''एक 'पूँजीवादी' दिमाग है
जो परिवर्तन तो चाहता है
मगर आहिस्ता–आहिस्ता
कुछ इस तरह की चीजों की शालीनता
बनी रहे।''
कुछ इस तरह की काँख भी ढंकी रहे
और विरोध में उठे हुए हाथ की
मुट्ठी भी तनी रहे।[३]

कल सुनना मुझे काव्य संग्रह के अंतर्गत कविता श्री काकुलम में मानव जीवन में नफरत की जिंदगी का उल्लेख करते हुए धूमिल कहते है कि –

''एक आदमी –
दूसरे आदमी की गरदन
धड़ से
अलग कर देता है
जैसे एक मिस्त्री बल्टू से
नट अलग करता है।''[४]

इसी रचना संग्रह के अंतर्गत उच्च वर्ग की कुछ सूचनाएं कवि की रचनाओं में इस प्रकार सुनाई पड़ती है–

''सबसे अधिक हत्याएं
समन्वय वादियों ने की।
दार्शनिको ने
सबसे अधिक जेवर खरीदा।''[५]

कवि ने राष्ट्र के कर्णधारों को सड़कों पर किस्तियों की खोज में भटकते हुए देखा है। इस मार्मिक धारणाओं को उन्होंने व्रिदुपता के रूप में मूल्यांकित किया है –

''मैने राष्ट्र के कर्णधारों को
सड़को पर
किस्तियों की खोज में
भटकते हुए देखा है।''[६]

'कल' कविता शीर्षक के द्वारा कवि धूमिल ने आर्थिक परिवेश के बयान को निर्भिकता के साथ मुखरित किया है –

''देह के बसंत में वापस लौटते हुए, कल तुम पाओगे
अपनी नफरत के लिए कोई कविता जरूरी नहीं है।
अपने जालों के साथ लौट जाएंगे
वे जो शरीरों की विक्री में माहिर है।''[७]

इस प्रकार जन कवि धूमिल ने आर्थिक परिवेश के अंतर्गत यह स्पष्ट किया है कि इस देश में मानवता अपने आपको असहाय महसूस कर रही है। यातना से गुजरती हुई युवा पीढ़ी सूखी पत्तियां चबाकर जीने को विवस हो रही है। कवि कहना तो बहुत कुछ चाहता है परन्तु सत्ताधारियों के भय से उसकी कविता उसी प्रकार शब्दों से खाली है, जैसे युद्ध के समय हमलावरों के भय से शहर खाली हो जाता है–

"संविद की होड़ में
एक आत्मीय चेहरा गायब

हो गया है और कविता
इतने जिंदा शब्दों के बावजूद
हमलावारों के डर से
खाली किए गए शहर की तरह दिखती है।"[८]

विश्लेषण – आजादी के बाद देश में बेकारी बढ़ी है। लोग दाने दाने के लिए दर दर की ठोकरे खाकर अपमान का घूंट पी रहे हैं। इस अवदशा को लक्ष्यकर कवि देश में फैली हुई बेकारी पर गहरी चोट करते हुए लिखता है–

"इस देश की मिट्टी में
अपने जांगर का सुख तलाशना
अंधी लड़की की आंखों में
उससे सहवास का सुख तलाशना है।"

नि:संदेह कवि धूमिल ने समाज में विभाजित वर्गवाद के विरूद्ध अपनी रचनात्मकता के माध्यम से राष्ट्र की सच्चाई को व्यक्त किया है।

कवि की दृष्टि में मध्य वर्ग तनाव से होकर गुजरता है तथापि वह वर्ग उच्चाकांक्षाओं को छोड़ना नहीं चाहता–

"चीजों को टटोल कर निकालना
अपने लिए तैयार करना–
और फिर उस तनाव से होकर –
गुजर जाना
जिसमें जिम्मेदारियां
आदमी को खोखला करती है।
मेरे लिए बसंत
बिलों के भुगतान के मौसम है
और यह वक्त है कि मैं भी वसूल करूं–
टूटती हुई पत्तियों की उम्र
जाड़े की रात जले कुत्ते का दुस्साहस
वारंट के साथ आए अमीन की उतावली
और पड़ोसियों का तिरस्कार
या फिर
उन तमाम लोगों का प्यार
जिनके बीच
मैं अपनी उम्मीद के लिए
अपराधी हूँ।"[९]

इसी प्रकार 'शांति पाठ' शीर्षक कविता के अंतर्गत मध्यवर्ग की उच्च अभिलाषाओं का भाव चित्र कवि धूमिल ने इस प्रकार उपस्थित किया है –

"अखबारों की सुर्खियां मिटा कर दुनिया के नक्शे पर
अंधकार की एक नई रेखा खींच रहा हूँ
मैं अपने भविष्य के पठार पर आत्महीनता का दलदल
उलीच रहा हूँ। मेरा डर मुझे चर रहा है
मेरा अस्तित्व पड़ोस की नफरत की बगल से उभर रहा है
अपने दिमाग के आत्मघाती एकांत में
खुद को निहत्था साबित करने के लिए
मैंने गांधी के तीन बंदरों की हत्या की है।
देश प्रेम की भट्ठी जला कर
मैं अपनी ठंड़ी मांसपेशियों को बिदेशी मुद्रा में
ढाल रहा हूँ।"[१०]

समकालीन रचनाकार धूमिल की मान्यता है कि मध्यवर्ग की दशा दो वर्गों के बीच दबी हुई जिंदगी है। वह इस वर्ग की अवदशा को इस प्रकार रेखांकित किया है –

"मैं बीचों बीच से दब गया हूँ
मैं चारों तरफ से बंद हूँ
मैं जानता हूँ कि इससे न तो कुर्सी बन सकती है।
और न बैसाखी
मेरा गुस्सा–
जनमत की चड़ी हुई नदी में
एक चढ़ा हुआ काठ है।"[११]

"मोचीराम" शीर्षक कविता के अंतर्गत कवि ने एक मध्यवर्ग के स्वरूप को इस प्रकार प्रतिबिम्बित किया है–

"न वह अकलमंद है
न वक्त का पावंद है।
उसकी आंखों में लालच है
हाथों में घड़ी है
उसे कहीं जाना नहीं है
मगर चेहरे पर
बड़ी हड़बड़ी है
वह कोई बनियां है
या बिसाती है।
मगर रोब ऐसा की हिटलर का नाती है।"[१२]

समकालीन परिवेश की आर्थिक विषमता का यथार्थ चित्रण धूमिल की कविता में देखने को मिलता है। हर वर्ग अधिक आर्थिक साधन जुटाने की अभिलाषा से समाज को कई वर्गों में विभाजित कर दिया है। सरकार की दलगत नीतियां, वर्ग संघर्ष के बढ़ाने में सहयोग कर रही है। इस वर्ग के पास आय का कोई ऐसा स्त्रोत नहीं है जिससे वे अपने और अपने परिवार को विलासिता की वस्तु का उपभोग करा सके।

इसी क्रम में सुदामा पांड़े का प्रजातंत्र काव्य संग्रह राष्ट्र के आर्थिक ढाँचे का यथार्थ चित्रण करते हुए कहता है कि मुझे रोटी दो, रोटी दो। यहाँ कवि की दृष्टि में अभाव, गरीबी, असमानता के बीच भूख की समस्या उभरकर प्रत्यक्ष हुई है –

"प्लेट साफ करते हुए
लड़के का सोना
कानूनी है कानूनी है।
रोटी दो रोटी दो।"[१३]

उच्च, मध्य एवं निम्न वर्ग का आर्थिक संघर्ष के संबंध में डॉ. रामनरायण शुक्ल का कथन है कि – "सर्वहारा शब्द एक निश्चित अर्थ का वाहक है। कारण आम आदमी के अन्तर्गत ग्रामीण मध्यवर्ग और शहरी निम्न पूँजीवादी–वर्ग तक के लोक आ जाते हैं। सर्वहारा और मध्यवर्ग या निम्न पूंजीपति–वर्ग की आर्थिक, राजनीतिक स्थिति और समझ भिन्न होती है।"[१४]

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि जनवादी साहित्यकार 'आम आदमी' और 'सर्वहारा' में अंतर समझता है। धूमिल जनवादी सर्वहारा वर्ग के साहित्यकार थे। वे स्वयं आर्थिक कटघरे में खड़े होकर सर्वहारा वर्ग के पक्ष में बयान देकर न्याय व्यवस्था कायम करना चाहते थे। उनकी सोच रही है कि इस देश में पूँजीपति अपने स्वार्थ के लिए कोई भी घिनौना कार्य कर सकता है। एक मजदूर रात दिन कार्य करता है, फिर भी उसे खाली पेट सोना पड़ता है। वही एक पूंजीपति कुछ नहीं करता केवल वह मजदूर की रोटी से खेलता है। परिणाम स्वरूप श्रमशील मानवता की जिंदगी अभाव और शोषण में ही बीत जाती है। धूमिल ने यह अनुभव किया है कि इस देश की संसद गरीबों की रोटियों से खेलने वालों के हाथों बिकी हुई है।

संदर्भ –

१. संसद से सड़क तक–पटकथा, पृष्ठ ११०, धूमिल।
२.संसद से सड़क तक–पटकथा, पृष्ठ ११४, धूमिल।
३.वही, पृष्ठ ११५–११६ ।
४.कल सुनना मुझे–कविता श्री काकुलम, पृष्ठ ५५, धूमिल।
५.कल सुनना मुझे–एक कविता : कुछ सूचनाएं, पृष्ठ ६२, धूमिल।
६.वही, पृष्ठ ६४ ।
७.कल सुनना मुझे–कल, पृष्ठ ७८, धूमिल।
८.संसद से सड़क तक–पतझड़, पृष्ठ ५६, धूमिल।
९.संसद से सड़क तक–बसंत, पृष्ठ २०, धूमिल।
१०.संसद से सड़क तक–शांति पाठ, पृष्ठ २४, धूमिल।
११.वही, पृष्ठ २५–२६ ।
१२.संसद से सड़क तक–मोचीराम, पृष्ठ ३६, धूमिल।
१३.सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र–न्यू गरीब हिन्दू होटल, पृष्ठ २४, धूमिल।
१४.जनवादी समझ और साहित्य, पृष्ठ ८, रामनारायण शुक्ल।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org